प्रौद्योगिकी ज़िंदगी को आसान बनाती है
कला-साहित्य ज़िंदगी को उद्देश्यपूर्ण एवं सार्थक बनाते हैं।

" प्रौद्योगिकी जिंदगी को आसान बनाती है वहीं कला-साहित्य जिंदगी को उद्देश्यपूर्ण एवं सार्थक बनाते है।" यह सुविचार दयाल बाग शिक्षक संस्थान , आगरा के निदेशक प्रो. सी पटवर्धन ने हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित विशेष आख्यान माला के अपने वक्तव्य में बोलते हुए कही थी। दिनांक -11 अप्रैल, 2025 को विशेष व्याख्यान माला के तहत हिंदी विभाग, कला संकाय, डी. ई. आई. दयालबाग, आगरा द्वारा एक महत्वपूर्ण विषय *" हिंदी अध्येयता : नयी तकनीक, क्षमता और अवसर की संभावना "* पर व्याखान आयोजित किया। विशेष वक्ता के रूप गरिमामय उपस्थिति दर्ज कराते हुए डी.ई.आई. के निदेशक आदरणीय प्रो० सी.पटवर्धन ने ये महत्वपूर्ण उदगार व्यक्त किए। प्रो.सी. पटवर्धन दयाल बाग़ शिक्षक संस्थान की अभियांत्रिकी संकाय में विगत लगभग तीन दशक से अभियांत्रिकी में अध्यापन का कार्य कर रहें हैं। यह आख्यान माला विशेष रूप से हिन्दी भाषा एवं साहित्य के अध्येताओं के लिए आयोजित की गयी थी। इस कार्यक्रम में दयाल बाग शिक्षक संस्थान के लगभग 200 से अधिक छात्र-छात्राओं एवं अध्यापकों ने सहभागिता की।

प्रो० सी० पटवर्धन ने अपने वक्तव्य में साहित्य-कला और प्रौद्योगिकी के समन्वय की बात कही। कार्यक्रम में आगे बोलते हुए उन्होंने कहा कि आज के बदले हुए परिदृश्य में प्रौद्योगिकी की भूमिका सभी क्षेत्रों में बढ़ी है चाहें वह चिकित्सा हो , व्यापार हो, संगीत हो ,कला हो या कि भारतीय भाषाओं का अध्ययन-अध्यापन हो। बिना प्रौद्योगिकी की भूमिका के प्रगति और उन्नति असंभव सी हो गयी है। प्रौद्योगिकी का उपयोग करके आज हम किसी भी क्षेत्र को बेहतर और आसान बना सकते हैं। इसके लिए प्रौद्योगिकी में खुद को कौशलयुक्त करने की आवश्यकता है। इसी बात को उन्होंने हिन्दी भाषा से संबद्ध करके भी समझाया। प्रो. पटवर्धन का मानना था कि प्रौद्योगिकीऔर हिन्दी भाषा के परस्पर संबंध को लेकर भी काम हुआ है लेकिन इसमें अभी भी बहुत काम करने की ज़रूरत है। उन्होंने बताया कि आजकल कृत्रिम बौद्धिकता (Artificial Inteligence, AI) जैसे सॉफ्टवेयर आ जाने से पारंपरिक अध्ययन-अध्यापन के तरीके और पारंपरिक रोजगार के सम्मुख चुनौतियाँ आ रही हैं। उन चुनौतियाँ का सामना करने के लिए हमें अपने को प्रौद्योगिकी के साथ सम्बद्ध करना होगा।

प्रो. सी पटवर्धन ने अपने वक्तव्य में आगे बताया कि आज प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिन्दी भाषा के उपयोग में बढ़ोतरी हुई है। जैसे हिन्दी में इंटरनेट, टेलीप्रिंटर, टैलेक्स, अनुवाद , AI इत्यादि। लेकिन

प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हमें हिन्दी भाषा को समर्थ भाषा बनाने के लिए आवश्यक प्रचार करना चाहिए । विज्ञान और तकनीकी विषयों के शिक्षण का माध्यम हिन्दी भाषा में होना चाहिए। उन्होंने हिन्दी के अध्येताओं को इन नयी चुनौतियों का सामाना करने के लिए तैयार होने पर ज़ोर दिया।

इस आख्यान माला सीरीज कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम की सह-संयोजक डॉ०नमस्या ने किया। उन्होंने कार्यक्रम का प्रारंभ संगीत विभाग की छात्राओं द्वारा विश्वविद्यालय प्रार्थना के गायन के साथ किया। विश्वविद्यालय प्रार्थना का गायन संगीत विभाग की छात्रा अमोली एवं उनकी सहयोगियों ने किया। तत्पश्चात डॉ नमस्या ने विषय की प्रासांगिता और गंभीरता पर प्रकाश डालते हुए अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के स्वागत वक्तव्य के लिए उन्होंने हिन्दी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो० शर्मिला सक्सेना को आमंत्रित किया। प्रो शर्मिला सक्सेना ने प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में AI के महत्त्व एवं हिन्दी साहित्य के संरक्षण और साहित्य के सीखने पर जोर दिया। प्रो० शर्मिला सक्सेना ने कहा कि हमें खुशी है कि प्रो. सी पटवर्धन तीसरी बार कला संकाय के हिन्दी विभाग में बोलने के लिए आए हैं यह हमारे लिए गर्व की बात है। हालांकि प्रो पटवर्धन सर के अध्ययन-अध्यापन का क्षेत्र हिन्दी भाषा और साहित्य नहीं है उसके बावजूद वे साहित्य पर अपनी बात हिन्दी के विद्वान -चिंतक की तरह रखते हैं। प्रो. शर्मिला सक्सेना ने कहा कि हमें आशा है कि प्रो. पटवर्धन के आज के व्याख्यान से हिन्दी के अध्येताओं के ज्ञान में वृद्धि होगी।

इस आख्यान माला सीरीज कार्यक्रम का संयोजन दयालबाग शिक्षक संस्थान के हिन्दी विभाग से डॉ० सूरज प्रकाश बड़त्या ने किया। उन्होंने विषय प्रस्तावना करते हुए जापान में टोक्यो यूनिवर्सिटी के अपने अध्यापन के अनुभव को साझा किया। सूरज बड़त्या ने बताया की जापान प्रौद्योगिकी के मामले में बहुत उन्नति कर चुका है। जापान ने हर क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का उपयोग करके जीवन को आसान बना दिया है। लेकिन उन्नति के साथ साथ प्रौद्योगिकी का नकारात्मक प्रभाव भी वहाँ के समाज पर हुआ है । आज जापानी समाज संबंधों में यांत्रिकी और अकेलेपन का दंश भोग रहा है। डॉ सूरज बड़त्या ने डी ई आई निदेशक प्रो सी पटवर्धन की बात का उल्लेख किया कि - प्रौद्योगिकी जीवन को आसान बनाती है और कला-साहित्य जीवन को सार्थक बनाते हैं। लेकिन आज प्रौद्योगिकी ने जापानी समाज की संवेदनशीलता को समाप्त कर उसे प्रोफेशनल बना दिया है। इसीलिए हमें प्रौद्योगिकी के नकारात्मक प्रभाव का भी ध्यान रखना चाहिए।

आयोजन में कला संकाय प्रमुख प्रो० संगीता सैनी ने गृह विज्ञान एवं सभी कलाओं के समन्वय की बात कही तथा जीवन को एक कला के रूप में प्रस्तुत किये जाने पर ज़ोर दिया। प्रो संगीता सैनी ने कला संकाय में व्याख्यान देने के लिए निदेशक प्रो सी पटवर्धन का आभार व्यक्त किया।
व्याख्यान में डी. ई. आई. के संगीत विभाग की तत्कालीन अध्यक्ष एवं खेरागढ़ विश्वविद्यालय की नव निर्वाचित कुलपति प्रो० लवली शर्मा ने AI के विश्वव्यापी प्रभाव एवं संगीत से अन्य कलाओं से

समन्वय की बात कही। प्रो० लवली' शर्मा ने AI की महत्ताओं के साथ-साथ उसकी कुछ सीमाओं का भी उल्लेख किया ।

व्याख्यान माला के इस कार्यक्रम में प्रो सी. पटवर्धन के वक्तव्य के अतिरिक्त एक अन्य विशेष पल भी था जब हिन्दी विभाग की दीवार पत्रिका ' संवाद संवाहक ' का विमोचन डी आई के निदेशक महोदय द्वारा संपन्न हुआ। इस दीवार पत्रिका का संचालन हिन्दी विभाग की छात्राओं द्वारा किया जाता है। दीवार पत्रिका में सभी विभागों से कविताओं, संस्मरण , निबंध आदि का संग्रह करके उसे हस्तलिखित रूप में इस पत्रिका पर अंकित किया जाता है। इस बार उसके 11 वें अंक , अप्रैल-2025 - का विमोचन किया गया।

इस व्याख्यान आयोजन में संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ० अनीता सिंह, संगीत विभाग की शिक्षिका , हिंदी विभाग के शिक्षकगण , डॉ० बृजराज कुमार सिंह, डॉ० रंजना पाण्डेय एवं हिंदी विभाग के शोधार्थी एवं अन्य विभाग के विद्यार्थी भी मौजूद रहे।

कार्यक्रम के अंत में कार्यक्रम की सह संयोजिका डॉ सुमन शर्मा ने सभी वक्ताओं की उपस्थिति पर न केवल धन्यवाद दिया बल्कि संबंधित विषय की उपयोगिता के महत्वपूर्ण बिंदुओं से भी परिचय कराया ।

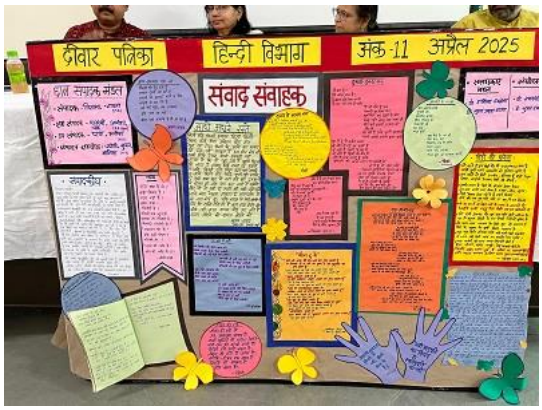
दीवार पत्रिका
हिन्दी विभाग
अंक-11 अप्रैल 2025
संवाद संवाहक